# अक्कमहादेवीयवर रचित "योगांग त्रिविधि"

विश्वगुरु, वैराग्यनिधि, जगज्योति,

जगन्माता, महर्षि, परमहंस,

वीर वैरागिनी, अक्कमहादेवी,

महादेवी अक्का —

योगांग त्रिविधि।

**.श्री महामहिमने | सोमशेखर गुरुवे**

**कामितद फलव कोडु कंडा | एन्न हृ-**

**द्धामदोळु निंतु मरे कंडा || 1 ||**

हे महामहिमाशाली! हे सोमशेखर गुरुदेव,

मनोवांछित फल प्रदान करो, देखो!

मेरे हृदय-धाम (हृदय रूपी निवास) में विराजकर मेरी रक्षा करो, देखो! || 1 ||

**मोदलु माडुवे नातु | सदमल गुरुविन**

**मृदुपदगळनु बलगोंडु | तत्वद**

**चदुर पदगळनु मुददिंद || 2 ||**

सबसे पहले मैं परम पवित्र, निर्मल गुरुदेव के

कोमल चरणों की परिक्रमा (प्रदक्षिणा) करूँगा,

और प्रसन्नतापूर्वक तत्त्वज्ञान के चतुर (विवेकपूर्ण) पदों का गान करूँगा। || 2 ||

**जीव - परमर भेद | भाववनरिवोडे**

**आवाव मुखदोळिरुवुदु | येन्नय**

**भावक्के बंदुदनोरेवे || 3 ||**

जीव और परमात्मा के भेद-भाव को समझने के लिए,

यह जिन-जिन रूपों व आयामों में विद्यमान है,

मेरी बुद्धि व अनुभूति में जैसा आया है, वैसा ही वर्णन करूँगा। || 3 ||

**शरणर नेलेगळनरिवडेन्न अळवे**

**हरियज सुररिगळवल्ल | वेंदेन-**

**लोरेवे नानवर कृपेयिंद || 4 ||**

शिवशरणों की वास्तविक स्थिति व महिमा को जानना क्या मेरी सामर्थ्य में है?

जब यह हरि (विष्णु), अज (ब्रह्मा) और देवों के भी वश की बात नहीं है,

तब मैं केवल उन्हीं की अनुकंपा और कृपा से इसका वर्णन कर रहा हूँ। || 4 ||

**एल्ल देवर देव | वल्लभने गुरु चेन्न**

**मल्लिकार्जुनने मनदोळु | इरु कंडा**

**बल्लंते निम्म स्तुतिसुवेनु || 5 ||**

सब देवों के देव! हे प्राणप्रिय स्वामी! हे गुरु चन्नमल्लिकार्जुन,

मेरे मन में सदा विराजमान रहो, देखो!

अपनी बुद्धि और ज्ञान के अनुसार मैं आपकी स्तुति करूँगा। || 5 ||

**आरु भूतंगळल्लि | आरु तत्वंगळल्लि**

**पूरैिसियिर्प घनवन्नु | मनदल्लि**

**आरैदु तिळिदडव मुक्त || 6 ||**

छह महाभूतों (तत्वों) और छह सिद्धांतों में जो परमात्मा परिपूर्ण होकर व्याप्त है,

उसे जो अपने मन में खोजकर जान लेता है,

वही वास्तव में मुक्त (जीवन्मुक्त) है। || 6 ||

**माघमासवु पोगि | मेगे बंदितु चैत्र**

**वेग मामरनु तळिरितु | अद कंडु**

**कूगि करेदित्तु कळकंठ || 7 ||**

माघ का महीना बीत गया और ऊपर से चैत्र का महीना आ गया,

शीघ्र ही आम का वृक्ष कोमल पल्लवों (कॉपलों) से भर गया; यह देखकर

मधुर स्वर वाली कोयल (कलकंठ) कुहुककर बुलाने लगी। || 7 ||

**आकाशदोळगण | जोडिकेय प्रभे बंदु**

**लोकंगळोळगे मुसुकलु | अद कंडु**

**एकांगियाडडव योगी || 8 ||**

जब चिदाकाश के भीतर से युगुल (जोड़ी) की दिव्य ज्योति आकर

समस्त लोकों में आच्छादित (व्याप्त) हो गई; उसे देखकर

जो एकांगी (परमात्मा में तल्लीन/अद्वैत) हो गया, वही सच्चा योगी है। ‖ 8 ‖

**ओंबत्तु वेज्जद | तुंबिद कोडनोळु**

**संभ्रमद मुत्तु इरुतिहुदु | मदरनुव**

**नंबि कंडवने कडु जाणा ‖ 9 ‖**

नौ छिद्रों (द्वारों) वाले इस भरे हुए घट (शरीर रूपी मटके) के भीतर

एक अत्यंत वैभवशाली मोती निवास करता है; उसकी गुप्त विधि (रहस्य) को

विश्वासपूर्वक जान लेने वाला ही परम ज्ञानी (चतुर) है। ‖ 9 ‖

**अष्टदळ कमलद | बट्टबयलोळगोंदु**

**मुट्टबारद घनविहुदु | मनदोळगे**

**दृष्टियिट्टवने कडुजाणा ‖ 10 ‖**

अष्टदल कमल के विशाल शून्याकाश (हृदय चक्र) के भीतर

एक अछूता, अनन्य परम तत्त्व (परमात्मा) विद्यमान है; अपने मन के भीतर

उस पर ध्यान (दृष्टि) केंद्रित करने वाला ही अत्यंत चतुर व ज्ञानी है। ‖ 10 ‖

**कोडगनोडगूडि | याडुव नरि नायि**

**गीडाद मनेय मुरिदिहेनु | मत्तोंदु**

**गूडिनोळु नानु मेरेदिहेनु ‖ 11 ‖**

बंदर के साथ मिलकर खेलने वाले सियार और कुत्ते के

चंगुल में फँसे घर (शरीर) को मैंने तोड़ दिया है; और एक अन्य

नीड़ (उच्च आध्यात्मिक निवास) में मैं सुशोभित हुआ हूँ। || 11 ||

**ओडहुट्टिदैवर | ओडने शिरगळनरिदु**

**मडदिय करव हिडिदिहेनु | मुंदण**

**नडुबट्टेयोळगे नडेदिहेनु || 12 ||**

साथ जन्मे पाँचों (पंचज्ञानेंद्रियों/पंचविषयों) के सिर तुरंत काटकर,

मैंने पत्नी (ज्ञान/बुद्धि) का हाथ थाम लिया है; और आगे

मुख्य (मध्यम) मार्ग पर चल पड़ा हूँ। || 12 ||

**नुडियबारदु हण्णु | कडेयोळगिरालागि**

**मडदि तानोर्वळद कंडु ग्रहिसल्के |**

**नुडियोळगागि मेरेयित्तु || 13 ||**

जब अनिर्वचनीय (जिसका वर्णन न हो सके) फल अंत में प्राप्त हुआ,

तो पत्नी (बुद्धि) ने अकेले ही उसे देखकर ग्रहण किया;

और वह दिव्य शब्द (नाद/मंत्र) के रूप में सुशोभित हुआ। || 13 ||

**कंगळ नोटदि | करगितेन्नय मनवु**

**टिंगळ सूडिदभवने | नीनीग**

**हिंगदलेनगे दयवागो || 14 ||**

आपकी दृष्टि के प्रभाव से मेरा मन पिघल गया,

हे चंद्रमा को धारण करने वाले अजन्मा प्रभु!

अब मुझसे दूर न होकर मुझ पर अपनी कृपा बनाए रखिए। || 14 ||

**नूरेंटु मणिगळ | मूरु भागव माडि**

**मूरु पुरुषरिगे अळवडिसि | मूवरनु**

**सेरि नानळिदु बयलादे || 15 ||**

एक सौ आठ मनकों के तीन भाग करके,

उन्हें तीन पुरुषों को सौंपकर; उन तीनों में

लीन होकर, मैं स्वयं मिट गया और शून्य (ब्रह्म) बन गया। || 15 ||

**ओंदु रत्नवु तानु | मुंॊदे ईरारागि**

**कुंददैवत्तु तेरनाद | रत्नवुदु**

**संदितु एन्न मनदोळु || 16 ||**

वह एक ही रत्न आगे चलकर बारह रूपों में बदला,

और फिर बिना घटे पचास प्रकार का हो गया;

वह रत्न मेरे मन में समा गया है। || 16 ||

**ऊरोळगे आडुव | मारिय हिडितंदु**

**भारिकोळवनळवडिसि | आ पुर**

**मारिदेनु ओब्ब चदुरंगे || 17 ||**

नगर (शरीर) में उपद्रव करने वाली मारी (अविद्या/माया) को पकड़कर,

भारी बेड़ियों में जकड़ दिया; और उस नगर को

मैंने एक चतुर ज्ञानी को बेच दिया। || 17 ||

**कोटि रविशशिगळिगे | मीटिद प्रभे बंदु**

**नाटित्तु एन्न मनदोळगे | अद कंडु**

**दाटिदेनु भविद कुणिगळनु || 18 ||**

करोड़ों सूर्य और चंद्रमाओं को मात देने वाली ज्योति आकर

मेरे मन में गहराई से समा गई; उसे देखकर

मैंने संसार रूपी गड्डों को पार कर लिया। || 18 ||

**अंबरदोळगण | तुंबिद कोडनुक्कि**

**कुंभिनिय मेले सुरियलु | मानवरु**

**सांबलोक तेरळिदरु || 19 ||**

जब गगनमंडल (सहस्रार) में भरा हुआ कलश उफनकर

पृथ्वी (शरीर/मूलाधार) पर बहने लगा; तो मनुष्य

सांबशिव के लोक (मोक्ष) की ओर प्रस्थान कर गए। || **19** ||

**मोरेव नादव केळि | उरिव ज्योतिय नोडि**

**सुरिवमृतवनु सविदुंड | कारण**

**तोरेदनो जनन मरणगळ || 20 ||**

गूंजते हुए अनहद नाद को सुनकर, प्रज्वलित ज्योति को देखकर,

और रसते हुए अमृत का आस्वादन करके;

उसने जन्म और मरण के चक्र का त्याग कर दिया। || 20 ||

**अष्टदिक्कलि शक्ति | अष्टरुद्ररु मूर्ति**

**अष्टदिक्पालारादिगळ | नडुविर्द**

**कट्टाणि मुत्त बरसेळेदे || 21 ||**

आठों दिशाओं में शक्ति है, आठों रुद्र ही स्वरूप हैं;

अष्टदिक्पालों आदि के मध्य में विद्यमान

श्रेष्ठ, पिरोए हुए मोती को मैंने अपनी ओर खींच लिया। || 21 ||

**ओंबत्तु वेज्जद | इंबुगळ बलिवुत्त**

**तुंबि सुषुम्मेयोळु घनव | नोडल्के**

**कुंभदोळमृत सुरियित्तु || 22 ||**

नौ छिद्रों (द्वारों) के स्थानों का निग्रह करते हुए,

सुषुम्णा नाड़ी में भरकर उस परम तत्त्व को देखने पर,

कलश (घट) से अमृत की धारा बह निकली। || 22 ||

**आरु मुखद मुत्त | नीरोळगिरिसल्के**

**नीरिळिदु मुत्तु उळियितु | आ मुत्त**

**सेरिसिदेन्नेन्न उरदल्लि || 23 ||**

छह मुख वाले मोती को जल के भीतर रखने पर,

जल सूख गया और मोती ही शेष बचा;

उस मोती को मैंने अपने हृदय में धारण कर लिया। || 23 ||

**उप्पर गुडि मेले सर्पनु हेडेयेत्ति**

**एप्पत्तु पुरवनगिदुंडु | दणियदे**

**कप्पेय शिरव मुरियित्तु || 24 ||**

ऊँचे महल (सहस्रार/शिखर) पर सर्प (कुंडलिनी) ने फन उठाया;

सत्तर नगरों को चबाकर खा लिया, फिर भी थके बिना

उसने मेंढक का सिर मरोड़ दिया। || 24 ||

**हित्तल बागिल तेरेदु सत्तातन एच्चरिसि**

**हेत्तम्मन करेव पिडियल्के | अवळीग**

**ित्तळै तन्न पदकव || 25 ||**

पिछला द्वार खोलकर, मृत समान व्यक्ति को जगाकर,

जन्मदात्री माता को पुकारकर पकड़ने जाने पर; उसने अब

अपना स्वयं का पदक (माला/हार) सौंप दिया। || 25 ||

**कोणन कोंबिन मेले | माणदेले कपियेरि**

**जाणेय मनेयोळहोगलु | अवळेद्दु**

**कोणन काल मुरिदिहळु || 26 ||**

भैंसे के सींगों के ऊपर निर्भीक होकर बंदर चढ़ा,

और चतुर स्त्री के घर में प्रवेश कर गया; तब उस स्त्री ने उठकर

भैंसे का पैर ही तोड़ दिया। || 26 ||

**हेमकूटद तुदिगे | आ महागजवेरि**

**सोमन कळेय सविदुंडु | मदवेरि**

**कामन पिडिदु बडियित्तु || 27 ||**

हेमकूट पर्वत के शिखर पर वह महाहस्ती (मन रूपी हाथी) चढ़ गया;

चंद्रमा की किरणों (अमृत) का आस्वादन करके, मदमस्त होकर

उसने कामदेव (वासना) को पकड़कर पीट दिया। || 27 ||

**पश्चिमद कोळदल्लि अच्छ तावरेयरळि**

**निश्चळद गंधवेसेयल्के | अद कंडु**

**सच्चित्त भ्रमरवेरगित्तु || 28 ||**

पश्चिम दिशा के सरोवर में शुद्ध कमल खिल उठा;

जब उसकी निश्चल सुगंध चारों ओर फैलने लगी, तो उसे देखकर

पवित्र चित्त रूपी भौंरा उस पर मँडराने/झुकने लगा। || 28 ||

**नवपुरदोळगोंदु | नवरत्न बेलेयागे**

**नवनारियरु अद कंडु | कोळलागि**

**भवसूत्र हरिदु बयलादे || 29 ||**

नौ द्वारों वाले नगर में जब एक नवरत्न बहुमूल्य बन गया,

तब नौ स्त्रियों ने उसे देखकर खरीद लिया;

संसार का बंधन टूट गया और मैं परम शून्य में लीन हो गया। || 29 ||

**बेट्टद मेल्गिच्चु | सुट्टित्तु काननव**

**अष्टमृगजातियळिदवु | अद कंडु**

**बट्टबयलोळगे मेरेदेनु || 30 ||**

पर्वत के ऊपर की अग्नि ने संपूर्ण जंगल को भस्म कर दिया;

अष्ट जीवों (आठ प्रकार के पाश/विकार) का नाश हो गया; यह देखकर

मैं उस अनपेक्षित विशाल शून्य (महाकाश) में सुशोभित हो उठा। || 30 ||

**कोंडक्के बीळ्वंथ | लंडस्त्रीयळु तानु**

**दंडेय कुणिके सडिलिसुलु | कोंडद**

**केंडदोळगागि मुळुगिदळु || 31 ||**

कुंड में गिरने वाली कुलटा (छल कपटी) स्त्री ने खुद ही

किनारे के फंदे को ढीला कर दिया; और वह कुंड के

दहकते हुए अंगारों में पूरी तरह डूब गई। || 31 ||

**कुंडलिय सर्पन | तुंड मेलके नेगेये**

**मंडलवु मूरु बेळगागि | उरियुव-**

**खंडज्योतियोळु बयलादे || 32 ||**

जब कुंडलिनी सर्प का सिरा ऊपर की ओर उछला,

तो तीनों मंडल जगमगा उठे; और प्रज्वलित

अखंड ज्योति के भीतर मैं परम शून्य (ब्रह्म) में लीन हो गया। || 32 ||

**अष्टावरणद हण्णु | बट्टबयलोळगिरलु**

**अष्टांगयोगवनु माडि | बळलुवरु**

**दृष्टियोळगिरुवुदनु मरेतु || 33 ||**

जब अष्टावरण का फल खुले विशाल शून्याकाश में विद्यमान है,

तब लोग अष्टांग योग साधना करके व्यर्थ ही थकते हैं;

उस सत्य को भूलकर जो उनकी स्वयं की अंतर्दृष्टि के सामने है। || 33 ||

**नेल निल्ल तोटदलि | एलेयिल्ल गिड हुट्टि**

**फलविल्ल हण्णु केडेदरलु | अद कंडु**

**मेललिल्ल होगि सविदिहेनु || 34 ||**

जमीन-रहित बगीचे में, बिना पत्तियों वाला पौधा उगा,

और बिना गुठली/बीज का फल गिरकर फूट पड़ा; उसे देखकर

बिना किसी संकोच या चबाए, मैंने जाकर उसका रस चखा। || 34 ||

**सप्तसागर बत्ति | हत्तु हमसेयु सत्तु**

**मुत्तु माणिकवु तलेदोरे | अदकंडु**

**सत्तवनु एद्दु कुणिद || 35 ||**

सातों समुद्र सूख गए, दस हंस मर गए,

और मोती व मानिक प्रकट होकर दिखाई देने लगे; यह देखकर

जो मरा हुआ (अज्ञानी) था, वह उठकर नाचने लगा। || 35 ||

**हत्तु सागरदल्लि | मत्ते स्नानव माडि**

**मत्तोंदु तेरद उणिसुगळ | नानुंडु**

**कत्तलेयळिदु बेळगादे || 36 ||**

दसों सागरों में फिर से स्नान करके,

और एक अलौकिक प्रकार का भोजन ग्रहण करके;

मेरा अज्ञान रूपी अंधकार मिट गया और मैं ज्ञान से प्रकाशित हो गया। || 36 ||

**कर्तृ श्रीगुरुराय | मुत्तिन कवचव**

**अर्तियिंदेनेगे अळवडिसे | अदरिंद**

**कित्तेनु मायाबलेगळनु || 37 ||**

जब जगत्कर्ता श्री गुरुदेव ने प्रेम और आत्मीयता से

मुझे मोतियों का कवच धारण करा दिया; तो उसके प्रभाव से

मैंने माया के सभी जालों को उखाड़कर फेंक दिया। || 37 ||

**नडेवे लिंगद कूडे | नुडिवे लिंगद कूडे**

**ोडविडदे बर्प विषयादि | भोगव**

**नूडुवे लिंगमुखगळगे || 38 ||**

मैं लिंग के साथ ही चलता हूँ, लिंग के साथ ही बोलता हूँ;

और निरंतर सामने आने वाले विषय-भोगों को

मैं लिंग के मुखों में ही अर्पित (समर्पित) कर देता हूँ। || 38 ||

**ओंबत्तु चौकद | उंबुडुव मनेयन्नु**

**नंबदले कडेगे तोडगिसि | मुंदण**

**संभ्रमद मनेगे नडेदेनु || 39 ||**

नौ चौकों (द्वारों) वाले उपभोग गृह (शरीर) पर भरोसा न करते हुए,

उसे अंततः त्याग की दिशा में मोड़कर; मैं आगे के

परम वैभवशाली धाम (मोक्ष-पद) की ओर चल पड़ा। || 39 ||

**गुरुवे नन्नय काय | हरनेन्नय मनवु**

**परम जंगमवे अनुभव | मुखवेन्न**

**िरवेल्ला लिंगमयवेंबे || 40 ||**

गुरु ही मेरी देह हैं, हर (शिव) ही मेरा मन हैं,

परम जंगम ही मेरा आत्मानुभव है;

मेरा पूरा अस्तित्व ही केवल लिंगमय है, यही मैं कहता हूँ। || 40 ||

**उट्ट सीरेय सीळि | तोट्ट तोडिगेय मुरिदु**

**बिट्टेहेनु नानु बिडुमुडिय | एले देव**

**कोट्टिहेनेन्न तनुमनव || 41 ||**

पहनी हुई साड़ी को फाड़कर, धारण किए गहनों को तोड़कर,

मैंने अपने बालों को खोल दिया है; हे देव,

मैंने अपना तन और मन आपको समर्पित कर दिया है। || 41 ||

**षडचक्रदोळगण | षडुविध लिंगक्के**

**षडुविधेंद्रियव | मुखमाडि विषयगळ**

**षडुभक्तियिंदलूडुतिहेनु || 42 ||**

छह चक्रों के भीतर विराजमान छह प्रकार के लिंगों को,

छह प्रकार की इंद्रियों को उनका मुख बनाकर; विषयों (संवेद्य पदार्थों) को

मैं षड्विध भक्ति के साथ अर्पित (भोजन/भोग) करा रहा हूँ। || 42 ||

**आधारदोळगण | आदिय लिंगक्के**

**मेदिनिय घ्राणमुखमाडि | गंधवनु**

**मोददिंद कोडुव सद्भक्त || 43 ||**

मूलाधार चक्र के भीतर स्थित आदि लिंग को,

पृथ्वी तत्त्व से जुड़ी घ्राणेंद्रिय (सूँघने की शक्ति) को मुख बनाकर;

सच्चा भक्त प्रसन्नतापूर्वक सुगंध अर्पित करता है। || 43 ||

**आरेसळ कमलद | कर्तृ गुरु लिंगक्के**

**सारजिह्वेयनु मुखमाडि | रसगळ**

**पूरैिसिकोडुव निजनिष्ठ || 44 ||**

छह पंखुड़ियों वाले कमल (स्वाधिष्ठान) के स्वामी गुरु लिंग को,

रसग्राही जिह्वा (जीभ) को मुख बनाकर;

परम निष्ठावान साधक संपूर्ण रसों का भोग अर्पित करता है। || 44 ||

**हत्तेसळ कमलद | कर्तृशिव लिंगक्के**

**मत्ते नेत्रगळ मुखमाडि | रूपिन**

**तुत्तुगळ कोडुवनवधानि || 45 ||**

दस पंखुड़ियों वाले कमल (मणिपूर) के स्वामी शिवलिंग को,

पुनः नेत्रों को उनका मुख बनाकर;

सजग व ध्यानस्थ साधक रूप (दृश्य) के कोर/ग्रास अर्पित करता है। || 45 ||

**द्वादशदळ कमलद | लाद चरलिंगके**

सादरदि त्वक्क मुखमाडि | स्पारुशनदि

**स्वादवनु कोडुवननुभावि || 46 ||**

बारह पंखुड़ियों वाले कमल (अनाहत) में स्थित चर लिंग को,

आदरपूर्वक त्वचा (स्पर्शेंद्रिय) को मुख बनाकर;

अनुभवी साधक स्पर्श के आनंद का आस्वादन अर्पित करता है। || 46 ||

**षोडश कमलद | लाडुव लिंगक्के**

**गाढदिं श्रोत्रमुखमाडि | शब्दवनु**

**नीडि कोडुतिर्प परिणामि || 47 ||**

सोलह पंखुड़ियों वाले कमल (विशुद्धि) में लीला करने वाले प्रसाद लिंग को,

गहन भाव से कर्ण (श्रोत्र) को मुख बनाकर;

रूपांतरित/सिद्ध साधक शब्द (ध्वनि) अर्पित करता रहता है। || 47 ||

**द्विदळत्रिकूटदलि | हुदुगिद महलिंगक्के**

**सदमल हृदयमुखमाडि | तृप्तियनु**

**ओदगि कोडुतिहनु समरसनु || 48 ||**

दो पंखुड़ियों वाले त्रिकूट (आज्ञा चक्र) में गुप्त/विराजमान महालिंग को,

परम निर्मल हृदय (चित्त) को मुख बनाकर;

समरस साधक परम तृप्ति प्रदान करता है। || 48 ||

**अंगदाशेयनळिदु | लिंगदाशेयवुळिदु**

**संगसुधेयने नलिदुंडु | तनुमनद**

**भंगवनु हरिदु सुखियादे || 49 ||**

शरीर की वासना का नाश करके, केवल लिंग की चाह को बचाकर;

शिव-संयोग रूपी अमृत का आनंदपूर्वक आस्वादन करके, तन और मन के

कष्टों व विकारों को दूर कर मैं पूर्ण सुखी हो गया। || 49 ||

**गुरु निम्म चरणव | मरेयेनु, मरेदडे**

**परिभवद बाधे बरलय्य | कडेयल्लि**

**दोरेये नरकदोळु तुळियय्य || 50 ||**

हे गुरुदेव! मैं आपके चरणों को कभी न भूलूँ; यदि भूल जाऊँ,

तो अपमान व तिरस्कार की पीड़ा मुझ पर आए, हे स्वामी!

और अंत में, हे प्रभु, मुझे नरक में रौंद देना! || 50 ||

**नडेवल्लि नुडिवल्लि | उडुवल्लि उंबल्लि**

**बिडेनय्य निम्म चरणवनु | ई छलव**

**कडेमुट्टिसेनेगे गुरुराय || 51 ||**

चलने में, बोलने में, पहनने में, खाने में,

हे प्रभु! मैं आपके चरणों को कभी नहीं छोड़ूँगा; इस दृढ़ संकल्प को

अंतिम छोर तक पूरा करवाइए, हे गुरुराज! || 51 ||

**घनगुरुवे नीयेन्न | मनदोळगिरु कंडा**

**मनव बिट्टिनिय अगलिदरे | निमगिन्नु**

**अनघशिवशरणरडियाणे || 52 ||**

हे महान गुरुदेव! आप मेरे मन के भीतर विराजमान रहिए, देखिए!

यदि आप मेरे मन को छोड़कर मुझसे अलग हुए,

तो आपको निष्पाप शिवशरणों के चरणों की सौगंध है! || 52 ||

**आवाव भोगगळ | जीवभावदि नानु**

**भाविसुत पिरिदु सविदरे | नरकद**

**बावियोळगद्दि तेगेयय्य || 53 ||**

जिन-जिन भोगों को यदि मैं जीव-भाव (अहंकार/व्यक्तिगत भाव) से

मानकर अत्यधिक आस्वादन करूँ;

तो मुझे नरक के कुएँ में डुबोकर बाहर निकालिए, हे स्वामी! || 53 ||

**गुरु कोट्ट भोगवनु | गुरुविगे नानित्तु**

**गुरुमुखदिंद ओदगिद | शेषवनु**

**अरिविंद उंडु सुखियादे || 54 ||**

गुरु द्वारा दिए गए भोग को गुरु को ही अर्पित करके,

गुरुमुख के माध्यम से प्राप्त हुए शेष (प्रसाद) को

ज्ञानावस्था में ग्रहण करके मैं सुखी व आनंदित हो गया। || 54 ||

**लिंगवु बंदेन्न | अंगदोळु नेलसलु**

**संगदोळ् ज्योतिरूपादर कारणदि**

**इंगिदवु एन्न भवभववु || 55 ||**

जब इष्टलिंग आकर मेरे शरीर में निवास करने लगा,

और उनके मिलन से ज्योति स्वरूप प्रकट होने के कारण;

मेरे जन्म-जन्मांतर के संचित पाप व संसार-चक्र सूखकर समाप्त हो गए। || 55 ||

**एल्ल भोगगळल्लि | पल्लविसि इरुतिहरु**

**बल्लडे अवर परि बेरे | शरणर**

**खुल्लमानवरु जरिवरु || 56 ||**

वे सभी प्रकार के भोगों में रहते हुए भी पल्लवित (अलिप्त) रहते हैं,

यदि कोई जाने, तो उनकी स्थिति ही बिल्कुल भिन्न होती है;

परंतु नीच व तुच्छ स्वभाव के मनुष्य ऐसे शिवशरणों की निंदा करते हैं। ‖ 56 ‖

**बल्लवरे बल्लरु | एल्लरिगे तिळियदु**

**कल्लोळु मिसुनियिरुवंते | इदरनुव**

**बल्लवरिगर्थ तिळियुवुदु ‖ 57 ‖**

ज्ञाता ही इसे जानते हैं; यह सभी को समझ में नहीं आता,

जैसे पत्थर के भीतर सोना छिपा होता है;

इसकी रहस्यमयी विधि को जानने वाले ही इसका सच्चा अर्थ समझते हैं। ‖ 57 ‖

**नाना जन्मगळल्लि | हीनळागिरुतिरलु**

**नीने बंदेन्न | कैपिडिद कारणदि**

**मौनमुद्रियोळोडवेरेदे ‖ 58 ‖**

अनेक जन्मों में जब मैं हीन व पतित बनी हुई थी,

तब आपने स्वयं आकर मेरा हाथ थामा; उसी कारण से

मैं मौनमुद्रा (परम शांति व निशब्द अवस्था) में लीन हो गई। ‖ 58 ‖

**हिंदण भववेल्ला | संधिहविल्लिगे**

**मुंदिन्नु नेगे भवविल्ला | गुरुराय**

**होंदिदेनु निम्म चरणव ‖ 59 ‖**

मेरे पिछले सभी जन्म यहीं समाप्त हो चुके हैं,

आगे अब मेरे लिए कोई संसार-चक्र या पुनर्जन्म नहीं है; हे गुरुराज!

मैंने आपके चरणों को प्राप्त कर लिया है। ‖ 59 ‖

**एन्न कायवे गुरु | एन्न प्राणवे लिंग**

**ेन्नंतरात्मा चरलिंग | वागलु**

**िन्नुंटे एनगे तनुमनवु ‖ 60 ‖**

मेरी देह ही गुरु है, मेरा प्राण ही लिंग है,

और मेरी अंतरात्मा ही जंगम (चरलिंग) बन चुकी है;

तो अब क्या मेरा कोई पृथक तन और मन शेष बचा है? ‖ 60 ‖

**नले नल्लन सुखव | नेल्लरोळुरुहुवळे**

**बल्लवरदर तेरदोळु | निजतृप्ति**

**सल्लीलेयिंद घटिसुवुदु ‖ 61 ‖**

क्या कोई चतुर स्त्री अपने प्रियतम के साथ प्राप्त सुख का ढोल सबके सामने पीटती है?

ठीक उसी प्रकार, ज्ञानीजनों के लिए भी

परम सत्य की निज-तृप्ति सहज लीला (सल्लीला) से ही घटित होती है। ‖ 61 ‖

**चिन्न- बण्णगळंते | रन्न दीप्तिगळंते**

**भिन्नविल्लडले बेरदिहरु | लिंगदोळु**

**पन्नगधरन शरणरु ‖ 62 ‖**

जैसे स्वर्ण और उसकी रंगत, जैसे रत्न और उसकी आभा,

बिना किसी भेद के परस्पर अभिन्न रूप से घुले-मिले रहते हैं;

वैसे ही शेषनागधारी शिव के शरणगण लिंग में तदाकार (लीन) रहते हैं। || 62 ||

**निम्म तोत्तिन तोत्तु | निम्म भृत्यन भृत्ये**

**निम् मडिया नानु मरेवोकके | घनगुरुवे**

**निम्म कृपेयिंद सलहय्य || 63 ||**

आपकी दासी की दासी, आपके सेवक की सेविका बनकर

मैं आपके श्रीचरणों की शरण में आई हूँ; हे महान गुरुदेव!

अपनी कृपा से मेरा पालन-पोषण कीजिए। || 63 ||

**भक्तर मनेयल्लि | तोत्तागि इरिसेन्न**

**भक्तरुंडुळिंद वरशेष | वनु कोंब**

**नित्यसुखवेनगे कोडु गुरुवे || 64 ||**

भक्तों के घर में मुझे दासी बनाकर रख लीजिए,

भक्तों द्वारा भोजन करने के बाद बचे हुए श्रेष्ठ महाप्रसाद (शेष) को ग्रहण करने का

नित्य सुख मुझे प्रदान कीजिए, हे गुरुदेव! || 64 ||

**एन्नवगुणगळ | निन्नु नी नोडडले**

**चेन्नमल्ले श कृपेगेय्द | करुणदि**

**एन्न भवबंध परियित्तु || 65 ||**

अवगुणों और त्रुटियों की ओर अब और न देखकर,

जब प्रभु चन्नमल्लेश ने अपनी अहेतुकी अनुकंपा की, तो उस करुणा से

मेरे संसार के सारे बंधन छिन्न-भिन्न होकर समाप्त हो गए। || 65 ||

**जय नित्यनिरूपने | जय सत्यसद्गुरुवे**

**जयभक्तररसा अघहरने | मद्गुरुवे**

**जय एन्न मनद तवनिधिये || 66 ||**

जय हो नित्य-निरूपण (सदा स्वरूपवान/निर्गुण) प्रभु की! जय हो सत्य स्वरूप सद्गुरु की!

जय हो भक्तों के स्वामी, पापों के हारी! हे मेरे गुरुदेव!

जय हो मेरे मन के परम निधान (अक्षय कोष)! || 66 ||

**गुरु चेन्नमल्लेश | वरकृपारसवेन्न**

**शरीरवनु तुंबि पोरसूसे | यदंरिंद**

**बरेदिहेनु बल्ल परियालि || 67 ||**

गुरु चन्नमल्लेश के श्रेष्ठ कृपा-रस ने जब मेरे

संपूर्ण शरीर को भरकर बाहर छलका दिया; उसी के प्रभाव से

अपनी बुद्धि व समझ के अनुसार मैंने इसे लिखा है। || 67 ||

**योगांगत्रिविधियनु | रागदिं बरेदोदे**

**रोगभवबादे परियुवुदु | लिंगदोळु**

**सागि भवदिंद मेरेयुवरु || 68 ||**

इस *योगांग त्रिपदी (योगशास्त्र काव्य)* को जो भी प्रेम-भाव से लिखकर या पढ़कर पाठ करेगा,

उसके शारीरिक रोग और संसार के कष्ट समाप्त हो जाएँगे;

और वह लिंग में लीन होकर भवसागर से पार सुशोभित होगा। ‖ 68 ‖